RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-02
February -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

सामासिक संस्कृति के नज़ीर : नज़ीर अकबराबादी

अर्शिया रसूल

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, करामत हुसैन मुस्लिम गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ।

हिंदुस्तान में विभिन्न जातियों और संस्कृतियों के मेल–जोल की परंपरा सदियों से चली आ रही है। विश्व के कोने–कोने से लोग यहाँ रहने एवं व्यापार करने के कारण आते रहे हैं। उन लोगों के आगमन के साथ–साथ उनकी भाषा, उनका सामाजिक, राजनीतिक दृष्टिकोण, धार्मिक रीति–रिवाज और साहित्यिक रूझान का प्रभाव हिंदुस्तानी संस्कृति में आत्मसात् होता गया। इसके अतिरिक्त यहाँ आने वाली जातियों ने इस मुल्क के रीति–रिवाज, रहन–सहन, वेश–भूषा का ढ़ंग, व्यापार का तरीका, जीवन–शैली को स्वीकार किया। इस तरह शुरू से ही हिंदुस्तान विभिन्न संस्कृतियों का संगम बन गया और इसी मेल–जोल के प्रभाव को सामासिक संस्कृति का नाम दिया जाता है। लेखक भी इसी समाज और वातावरण में लिप्त रहता है। किसी न किसी रूप में लेखक का दृष्टिकोण, उसकी विचारधारा, उसकी रीति–परंपरा उसके लेखन शैली का हिस्सा बन जाती हैं।

अठारहवीं उन्नीसवीं शताब्दी पर यदि दृष्टि डाली जाए तो इस बात का पता चलता है कि भारत में अंग्रेज़ों के आगमन के पूर्व हिन्दू मुसलमान आपस में प्रेमपूर्वक रहते थे उनके आपसी रिश्ते मज़बूत थे। उनके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बहुधर्मी, बहुजातीय और बहुराष्ट्रीय एकता दिखलाई पड़ती है। सम्मिश्रण, समन्वय, सामंजस्य और सामीप्य का प्रभाव हिन्दू–मुस्लिम दोनों जातियों पर पड़ा।

''हिन्दूओं और मुसलमानों में एकता और समता पैदा करने के प्रयासों के परिणाम एक समन्वित संस्कृति के रूप में दिखाई दिया जो न तो विशुद्ध मुस्लिम संस्कृति थी और न तो उसे विशुद्ध हिन्दू संस्कृति ही कहा जा सकता है बल्कि यह मिली–जुली हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति थी।''[1]

हिंदुस्तानी गंगा–जमुनी संस्कृति के समर्थकनज़ीर अकबराबादी (1735) सुविख्यात कवि के रूप में प्रचलित हैं। उनका जीवनकाल 18वीं शताब्दी के मध्यपूर्व से 19वीं शताब्दी के मध्यपूर्व था। राष्ट्रकवि नज़ीर अकबराबादी हिंदी साहित्य के ऐसे कीर्तिस्तंभ है जिनके काव्य में सामासिक संस्कृति प्रखर रूप से दिखलाई देती है। उनके हृदय में अपने देश के प्रति देशभक्ति एवं देशप्रेम की भावना है। नज़ीर अकबराबादी को अपनी भाषा, शैली, एवं लेखन की विशेषता के कारण हिंदी–उर्दू जगत् में ऐसा विशेष स्थान प्राप्त हुआ जिसके वे वास्तव में अधिकारी थे। कवि नज़ीर की कविताओं में उत्सवों, मेलों के चित्रण में हमारी संस्कृति के विशिष्ट आयाम दिखलाई देते हैं।उनकी कविताओं में सारे धर्मों की अक्कासी की गई है। उन्होंने अपनी कविताओं में कहीं भी हिंदू–मुसलमान, सिक्ख–ईसाई आदि के नाम पर भेदभाव नहीं किया क्योंकि उनका उद्देश्य मानवता का प्रचार करना था जिसके माध्यम से सभी धर्मों और कौमों को एक ही स्तर पर लाकर खड़ा किया जा सकता था। जिससे हमारे समाज में एकता की जड़ मज़बूत हो सके और लोगों की सोच एक–दूसरें के धर्मों को कमतर समझने के बजाए कठिन समय में एक–दूसरे का साथ देने और मिल–जुलकर काम करने का साहस पैदा कर सके। नज़ीर सामासिक संस्कृति के पक्षधर थे। इसका प्रमाण उनकी कविताओं से मिलता है। उनकी कविताएँ किसी विशिष्ट धर्म को लेकर नहीं लिखीगयीं बल्कि समस्त धर्मों के तीज–त्यौहर, रीति–परंपराएँ, मान्यताओं, खान–पान, रहन–सहन आदि का सांस्कृतिक रूप दर्शाती हैं। अपने दृष्टिकोण को नज़ीर ने एक सफल कलाकार की तरह जनसामान्य के समक्ष रखना अपना कर्तव्य समझा और जब तक जीवित रहें सामासिक संस्कृति को बनाए रखने के लिए सदैव प्रयासरत रहें। नज़ीर अकबराबादी की साझा संस्कृति के विषय में डॉ0 एहतिशाम हुसैन का कथन द्रष्टव्य है–''उस शुष्क और उजाड़ संगम पर आकर 'नज़ीर' ने अज़ान भी दी और शंख भी फूँका। तसबीह भी ली और जनेऊ भी पहना। मुहर्रम में रोए तो होली में भड़ुवे भी बने। रमज़ान में रोज़े रखें और सलूनों पर राखी बाँधने को मचल पड़े। शब्बरात पर महताबियाँ छोड़ीं तो दिवाली पर दीप सजाये। नबी, रसूल, वली, पीर,पैगंबर के लिए जी भरकर लिखा तो कृष्ण, महादेव, नरसी, भैरोंऔर नानक पर भी श्रद्धांजलि चढ़ायी। गुलो– बुलबुल पर कहा तो आम और कोयल को पहले याद रखा। पर्दे के साथ बसंती साड़ी भी याद रही और तो और गर्मी, बरसात और सर्दी पर भी लिखा। बच्चों के लिए रीछ का बच्चा, कौआ और हिरन, गिलहरी का बच्चा, तरबूज़, पतंगबाज़ी, बुलबुलों की लड़ाई, ककड़ी, तैराकी, तिल के लड्डू पर लिखने बैठे तो बच्चे बन गये। हर एक बालक गली–कुचे में गाता फिर रहा है।जवानों और बुड्ढ़ों को नसीहत देने बैठे, तो लोग वज्द में आ गये। मानों कुरान, हदीस, वेद, गीता, उपनिषद्, पुराण सब घोलकर पी जाने वाला कोई सिद्धपुरूष बोल रहा है''[2]

RRIJM 2015, All Rights Reserved

प्रस्तुत वक्तव्य से यह स्पष्ट होता है कि नज़ीर केवल मुसलमान ही नहीं थें बल्कि हिंदुस्तानी मुसलमान थे। यदि उनके संस्कार के अनुसार देखा जाए तो वह न मुसलमान थें और न हिंदू वह इंसान थे। सही मानो में मानवता ही सर्वोत्तम धर्म है। उनकी मन में धार्मिक कट्टरता नहीं थी। वे सभी धर्मों को बिना किसी भेदभाव के एकसमान मानते थे। नज़ीर अकबराबादी हिंदुस्तानी मुश्तरका तहज़ीब के प्रतिनिधि कवि हैं। वह पूरी तरह से अपने सांस्कृतिक रंग में डूबे हुए दिखलाई पड़ते हैं। इससे संबंधित डॉ0 अब्दुल अलीम का संदर्भ प्रस्तुत है–''कवि नज़ीर की सांस्कृतिक दृष्टि भारतीय मिट्टी में पोषित संस्कृति से हुई थी। उनकी दृष्टि न केवल मुस्लिम संस्कृति से पोषित, न हिन्दू संस्कृति से, बल्कि संस्कृति का वह रूप उनकी दृष्टि से छलकता था जो हिंदू और मुस्लिम संस्कृति के मिश्रण से इसी देश की मिट्टी में, इसी देश की जलवायु में सामासिक संस्कृति के रूप में विकसित हुई थी। कवि नज़ीर के काव्य उनकी इसी सामासिक संस्कृति का प्रतिफलन है जिसमें अनेक संदर्भों से भारतीय संस्कृति के तत्वों को अभिव्यक्ति के आयाम मिले हैं।''[3]

देशप्रेमी नज़ीर अकबराबादी ने ईश्वर के सभी मान्य स्वरूप को अपनी आस्था का विषय बनाया। उन्होंने ईश्वर के रूप को धर्म विशेष दृष्टिकोण से नहीं देखा। इससे संबंधित उनकी रचना हम्द, इश्क अल्लाह को देखा जा सकता है।

''इलाही तू सत्तारो ग़फ़्फ़ार है
मेरा याँ गुनाहों का अम्बार है
न हामी कोई न मददगार है
अब इस बेबसी में तू ही है।''[4]

वहीं नज़ीर अकबराबादी की कविता 'गणेश स्तुति' में हिंदू धर्म के प्रति उनकी आस्था को देखा जा सकता है जो धर्म विशेष के प्रति नहीं बल्कि एक हिंदुस्तानी संस्कृति में रचे–बसे उस व्यक्तित्व की शिनाख़्त कराता है जो गंगा–जमुनी संस्कृति की मिसाल है। उनकी कविता इस प्रकार है–

''भक्तों को अपने देते हैं दर्शन गणेश जी
वरदान बरसते हैं जो देवन गणेश जी
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गणेश जी
देवंगे वो सिद्धी जनघन गणेश जी।''[5]

नज़ीर अकबराबादी ने पारंपरिक मान्यताओं को भी अपनी रचनाओं में पेश किया है। जैसा कि भारतीय संस्कृति में बच्चों के जन्म के बाद उनके नामकरण करने का रिवाज है। जो संपूर्ण जीवन उसी नाम द्वारा जाना–पहचाना जाता है। यह परंपरा हिंदू–मुस्लिम दोनों ही धर्म में व्याप्त है। मुसलमानों में बच्चों का अक़ीका कराते हैं। मनुस्मृति के अनुसार–''हिंदू संस्कृति में जन्म से दसवें या बारहवें दिन ज्योतिष शास्त्र में कहे गये शुभ तिथि, मुहूर्त और गुण–युक्त नक्षत्र में बालक का नामकरण संस्कार किया जाता ह।''[6] नज़ीर ने अपनी कविता 'जन्म कन्हैया' में श्रीकृष्ण के नामकरण का सुंदर एवं सजीव वर्णन किया है। नामकरण के अवसर पर सगे–संबंधी उपहार लाते हैं, औरतें गीत गाती हैं, नेग दिए जाते हैं। बच्चे को घर के सभी लोग उसकी दीर्घायु के लिए आर्शिवाद देते हैं आदि इन सभी रस्मों का वर्णन नज़ीर के काव्य 'जन्म कन्हैया' में प्रस्तुत है–

''अब नन्द के घर की बात सुनों, वां एक अचंम्भा यह ठहरा,
जो रात को जन्मी थी लड़की,और भोर को देखा तो लड़का।।''[7]

नज़ीर अकबराबादी की धार्मिक कविताओं का विषय हिंदुस्तानी संस्कृति के वह महत्वपूर्ण अंग भी हैं जिसे प्रत्येक हिंदुस्तानीयों ने अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा माना है। उनकी कविताएँ किसी विशिष्ट धर्म के लिए नहीं थीं बल्कि उन्होंने हिंदुस्तानी जीवन को जिया ही नहीं बल्कि महसूस भी किया था। यही कारण था कि उन्होंने केवल ईद, शब्बरात पर ही नहीं बल्कि होली, दीवाली और रक्षाबंधन की कविताएँ भी उसी उत्साह और प्रेम से लिखा था। उत्सव हमारी संस्कृति का ऐसा तत्व है जो सामाजिक संबंधों, निजी संबंधों, आस–पास के लोगों को प्रेमपूर्वक जोड़े रहती है। इन अवसरों पर लोग एक–दूसरे के गिले–शिकवे भूलकर साथ मिलकर खुशियाँ मनाते हैं। होली में उनका मन रंगों में रम जाता है। नज़ीर लंबे समय तक ब्रज क्षेत्र में रहें जहाँ होली का अपना अलग ही महत्व है। हिंदुस्तानी संस्कृति में होली प्रेम, समता, उदारता आदि का सूचक है। खुशियों का परिपूर्ण ख़ज़ाना है। होली फागुन माह की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाता है। नज़ीर ने 'होली' परलगभग 21 कविताएँ लिखी हैं।

''मियां तू हमसे न रख कुछ गुबार होली में।
कि रूठे मिलते हैं आपस में यार होली में।
मची है रंग की कैसी बहार होली में।
हुआ है ज़ोरे चमन आश्कार हाली में।
अजब यह हिन्द की देखी बहार होली में।।''[8]

होली के विषय में यदि बात की जाए तो ब्रज की होली के बिना होली का सांस्कृतिक रूप अपूर्ण ही रह जाता है। नज़ीर की कविता होली में ब्रज प्रदेश की होली का सुसंस्कृत दृश्य चित्रित किया है। ब्रज निवासी पूरे उल्लास के साथ होली खेलते हैं। राधा और कृष्ण उसके केंद्र बिंदु है। जब वह अपने इर्द–गिर्द लोगों को झूमते देखते हैं तो उनका मन भी हर्षोल्लास से झूम उठता है। वह हर एक को गाते–बजाते देख अपनी कविता में लिखते हैं–

'' 'नज़ीर' होली का मौसम जो जग में आता है
वह ऐसा कौन है होली नहीं मनाता है।

कोई तो रंग छिड़कता है कोई गाता है
जो खाली रहता है देखने को जाता है
जो ऐश चाहो सो मिलता है यारों होली में।।''[9]

जिस तरह से कवि नज़ीर ने दिगर त्यौहारों के सकारात्मक पक्ष को उभारा है वहीं उन्होंने उससे होने वाले नकारात्मक प्रभाव को भी दर्शाया है। शब्बरात मुस्लिम संस्कृति के आस्था, विश्वास एवं आध्यात्मिकता के पलों की ओर ले जाने वाला त्यौहार है। यह त्यौहार हिंदू संस्कृति के पर्व दीवाली से मिलता–जुलता है। इस त्यौहार में लोग आतिशबाज़ी करके मनोरंजन करते हैं। नज़ीर ने आतिशबाज़ी की परंपरा को स्वीकारते हुए उससे हाने वाली नकारात्मक घटनाओं को भी उजागर किया है–

''चेहरा किसी का जल गया आंखें झुलस गई।
छाती किसी की जल गयी बाँहें झुलस गयीं।।
टाँगें बची किसी की तो रानें भुलस गई।
मूछें किसी की फुंक गई पलकें झुलस गई।।
रक्खे किसी की दाढ़ी पे चिन्गारी शब्बरात।।''[10]

भारतीय लोक जीवन के कवि नज़ीर अकबराबादी ने अपनी कविता के माध्यम से समस्त समाजिक पहलुओं को पेश किया है जिसका बुनियाद इंसान है उसे व्यावहारिक स्तर पर अपने हिंदुस्तान एवं अपने परिवेश से जोड़ा है। वह अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों को धार्मिक कट्टरता, धर्म के नाम पर हो रहे भेदभाव को समाप्त करने को संदेश देते हैं और साथ ही भाईचारा,कौमी एकता, सद्भावना का पैग़ाम देते हैं। वे अपनी कविता 'आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा' में कहते हैं–

झगड़ा न करे मिल्लतो मज़हब का कोई यां।
जिस राह में जो आन पड़े खुश रहे हर आं।।
जुन्नार गले या कि बगल बीच हो कुरआं।
आशिक़ तो कलंदर है न हिन्दू न मुसलमां।।''[11]

गंगा–जमुनी संस्कृति से ओत–प्रोत नज़ीर अकबराबादी त्योहार को संस्कृति का एक प्रमुख अंग मानते है। जिसके द्वारा लोग एक–दूसरे के समीप आते हैं। अपनी खुशियाँ बाँटते हैं, जिससे आपसी संबंधों में और अधिक मज़बूती आ जाती है। इसमें विभिन्न धर्म, जातियों के बीच समन्वय भाव स्थापित हो जाता है। नज़ीर अकबराबदी अपनी कविताओं द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण, सद्भावना, उदारता को महत्व देते हुए सामासिक–संस्कृति को बचाये रखने के लिए प्रेरित करते हैं। नज़ीर अकबराबादी अपनीं गंगा–जमूनी संस्कृति के प्रति समर्पित हैं। वे सदैव अपने भारतीय होने पर गर्व महसूस करते है। भारतीय संस्कृति की इसी विशेषता ने बहुत से ह्रदयों का स्पर्श किया।

संदर्भ :

1. डा0 सुभाष चन्द्र, साझी संस्कृति की विरासत, डा0 सुभाष चन्द्र, आधार प्रकाशन हरियाणा, 2011, पृ0–31
2. प्रोफेसर सय्यद एहतिशाम हुसैन, उर्दू साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008, पृ–99
3. डॉ0 अब्दुल अलीम, नज़ीर अकबराबादी और उनकी विचारधारा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992, पृ0–127
4. सं0 डॉ0 नज़ीर मुहम्मद, नज़ीर ग्रंथावली, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, महात्मा गाँधी मार्ग, लखनऊ, 1992, पृ0–6
5. वही पृ0–83
6. सं0 श्री राजवीर शास्त्री, विशुद्ध–मनुस्मृतिः, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली, 1986, पृ0–प्रथम अध्याय 84
7. सं0 डॉ0 नज़ीर मुहम्मद, नज़ीर ग्रंथावली, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, महात्मा गाँधी मार्ग, लखनऊ, 1992, पृ0–559
8. वही पृ0–338
9. वही पृ0–340
10. वही पृ0–318
11. वही पृ0–180

RRIJM 2015, All Rights Reserved